SARASWATI
The Research Journal

विशेषांक

साहित्य, सिनेमा और फिल्मांकन

SBES College of Arts and Commerce,
Aurangabad, Maharashtra

Special Issue (2) 2020-21, ISSN 2229 - 5224

Saraswati
The Research Journal

Special Issue
साहित्य, सिनेमा और फिल्मांकन

Editorial Board
Prof. M.A. Paithankar
In-charge Principal
Prof. M.M. Gaikwad
Vice-Principal
Dr. P.P. Deo
Vice-Principal

Executive Editors of this issue
Prof. G.G. Rajput
Head, Department of Hindi
Dr. G.P. Kakade
Assistant Professor, Department of Hindi

Please Note

- The views expressed in this publication are purely personal judgments of the contributors and do not reflect the views of SBES College of Arts and Commerce, Aurangabad, Maharashtra or the editorial board of the research journal.
- No part of this publication may be reproduced or copied in any form by any means without prior written permission.

ISSN 2229 – 5224
© All rights reserved

Email feedback to sbescollegeac@yahoo.com

Published and Typesetting
SBES College of Arts and Commerce, Aurangabad, Maharashtra
Printed

18.	हिंदी साहित्यकारों का हिंदी सिनेमा में योगदान	डॉ. दिग्विजय टेंगसे	121
19.	सिनेमा निर्देशन की तकनीकी	डॉ. चंदा सोनकर	132
20.	इक्कीसवीं सदी के हिंदी सिनेमा का समाज से संबंध	प्रा. विजय वाघ	139
21.	साहित्य पर आधारित सिनेमा:समीक्षा	ज्योति मिश्रा	146
22.	साहित्य, सिनेमा और समाज	प्रा. समाधान गांगुर्डे	150
23.	सिनेमा फिल्मांकन की वैचारिकी	डॉ. गोरख काकडे, संगीता रंधवे	156
24.	समकालीन सिनेमा का बदलता स्वरूप	सिमरन	162
25.	हिंदी साहित्य पर आधारित सिनेमा	डॉ. शंकर दळवी	169
26.	हिंदी उपन्यासों का फिल्मांकन	डॉ.उमाकांत साळवकर	175
27.	सिनेमा का बदलता स्वरूप	डॉ. हाशमबेग मिर्झा, रहिसा मिर्झा	185
28.	साहित्य और सिनेमा: सेंसर और अभिव्यक्ति की आजादी	डॉ. संतोष तांदळे	191
29.	साहित्य और सिनेमा : सह-संबंध	अनुपमा कुलकर्णी	197
30.	साहित्य, सिनेमा और समाज	डॉ. कृष्णा कदम	222
31.	मराठी साहित्य का फिल्मों में योगदान	डॉ. विशाल लिंगायत	228
32.	सिनेमा और समाज	डॉ. गोरख काकडे, मनीषा चव्हाण	237
33.	स्त्री मन की सिनेमाई भाषा : सुजाता	डॉ. विजया सिंह	242
34.	साहित्य और सिनेमा का अंत:संबंध	डॉ. जयराम सूर्यवंशी	249
35.	साहित्य, सिनेमा और समाज का अंत:संबंध	डॉ. ललिता राठोड, प्राजक्ता देशमुख	254
36.	हिंदी सिनेमा और गीत- संगीत का वैश्विक परिदृश्य	डॉ. भारती चौधरी, पटेल सत्यमकुमार	260
37.	हिंदी सिनेमा और समाज की मानसिकता	डॉ. ज्योती गायकवाड	271

मराठी साहित्य का फिल्मों में योगदान

डॉ. विशाल लिंगायत
सोलापुर, महाराष्ट्र

प्रस्तावना :

साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज में होनें वाली गतिविधियों का चित्रण साहित्य में अभिव्यक्त होता है। साहित्यकार समाज की बारीकियों को, सच्चाई को अपने अनुभव से अभिव्यक्त करता है। सिनेमा शताब्दी की एक महत्त्वपूर्ण देन है, आज सिनेमा एक ऐसा क्षेत्र है जिसकी और प्रत्येक व्यक्ती आकर्षित होता है। सिनेमा एक ऐसा सशक्त माध्यम है, जो आदमी के जीवन का आज भी दर्पण बना हुआ है। आधुनिक समय में सिनेमा जीवन का एक अभिन्न अंग है, जिसे हम आम आदमी से अलग नहीं कर सकते। साहित्य में अभिव्यक्त बात समाज में व्याप्त होती है, साहित्य तत्कालीन समाज का दर्पण होता है। सिनेमा मानव समाज के मनोरंजन का साधन है, साहित्य सिनेमा का इतिहास देखा जाये तो साहित्य अधिक पूराना है और सिनेमा आधुनिक युग की कडी माना जाता है। साहित्य यदि पितामह है, तो सिनेमा उसका पोता है। साहित्य पढनेवाला एक विशिष्ट वर्ग होता है जो की सुशिक्षित भी होता है, परंतु फिल्म देखनेवाले हर वर्ग के साधारण लोग है, जिसमें खासकर मजदूर वर्ग एवं अनपढ लोगों की भी गिनती की जा सकती है। साहित्य और सिनेमा दोनों अपने-अपने क्षेत्र में मौलिक है। साहित्य और सिनेमा का रिश्ता लगभग हर दौर में चलता रहा है। मराठी सिनेमा जिसे भारतीय सिनेमा इतिहास का एक अभिन्न अंग माना जाता है। विजय अग्रवाल लिखते है, "किसी भी कथानक के फिल्मीकरण का आयाम इतना विस्तृत होता हैं की उसमें न केवल उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध और कविता की कथावस्तू ही समाहित हो सकती है। बल्कि इन साहित्यिक विधाओं के कलारूप जैसे भाषा, अलंकार योजना, बिंब, एवं प्रतीक आदि को भी बडे प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है"।[1]

पौराणिक कथाओं के साथ मराठा ऐतिहासिक घटनाएं, रोजमर्रा जीवन की समस्याएं भी चित्रकरण के लिए चुनी गई। इसी काल में

संदर्भ सूची :

1) अग्रवाल विजय, 'सिनेमा और समाज', पृ. - 60

2) कुमार हरीश, 'साहित्य और सिनेमा', पृ. - 15

3) डॉ. कुमार कृष्णा, 'सूचना तंत्र और प्रसारण माध्यम', पृ. - 176

4) अग्रवाल विजय, 'सिनेमा और समाज', पृ. - 61

5) अग्रवाल विजय, वही, 'सिनेमा और समाज' लेख - डॉ. लागू श्रीराम, पृ. 60

6) डॉ. तिवारी अर्जुन, 'जनसंचार और हिंदी पत्रकारिता', जयभारती प्रकाशन - अलाहाबाद,पृ.- 88

7) पांण्डेय रतनकुमार, (संपादक), 'अनभै', पृ. - 52

8) मल्होत्रा रसा, 'हिंदी पत्रकारिता', पृ. - 208

9) पांडेय रतनकुमार, (संपादक) 'अनभै', पृ. - 52

10) दुबे विवेक, 'हिंदी सिनेमा और साहित्य', संजय प्रकाशन, दरियागंज - नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2009, पृ. - 114

11) रावत ज्ञानेन्द्र, 'औरत एक समाजशास्त्रीय अध्ययन', विश्वभारती पब्लिकेशन्स, कोलकाता, पृ.-146